आपका सच्चा मित्र !

मनुष्य एक ऐसा प्राणी है जो अकेलेपन से घबराता है। वह व्यक्ति-विशेष की मित्रता चाहता है ताकि उसके साथ अपना सुख-दुख बाँट सके। जब किसी के बाहरी रूप या व्यवहार को ही देखकर हम उसे अपना मित्र बना लेते हैं तो हमें धोखा हो सकता है। औपचारिक मित्रता अधिक समय की नहीं होती। एक ही कक्षा या कार्यालय में साथ रहकर बनी घनिष्ट मित्रता भी स्थान बदलने या समय बीतने पर भुला दी जाती है और हम नये मित्र बना लेते हैं। किसी मामूली-सी बात या थोड़े-से पैसे के कारण उत्पन्न विवाद अनन्य मित्रों को भी शत्रु बना देता है। हम सबने अनुभव किया है कि सच्चा एवं विश्वासयोग्य मित्र पाना कितना कठिन है। परन्तु, हम यदि निःस्वार्थी एवं भरोसेमन्द मित्र पा भी जाँय जिसकी मित्रता स्थायी हो, तो भी प्रश्न उठता है कि क्या वह हमारी मित्रता को स्वीकार करेगा। क्या हम अपने आपको उसकी मित्रता के योग्य सिद्ध कर सकेंगे? क्या वह भी हमारी मित्रता की चाह करेगा?

परमेश्वर का वचन बतलाता है कि परमेश्वर हमसे प्रेम करता है तथा वह हमारी मित्रता की चाह रखता है। वह हमारे साथ अटूट संगति रखना चाहता है। उसने हमें रचा तथा बनाया है और हमें अपना स्वभाव दिया है। उसका निःस्वार्थ प्रेम हमारे रूप, रंग, जाति, भाषा जैसी बाहरी बातों की चिन्ता नहीं करता। वचन कहता हैं कि माँ दूध-पीते-बच्चे को भुला सकती है, परन्तु वह हमें नहीं भूलता। यह परमेश्वर केवल एक शक्ति ही नहीं, परन्तु विचारशील व्यक्ति है जो हमारी मित्रता तथा संगति पाकर प्रसन्न होता है।

परन्तु समस्या तो यह है कि परमेश्वर द्वारा प्रेम करने तथा हमारी मित्रता की चाह रखने पर भी हमने परमेश्वर को भूला दिया है। हम स्वार्थी और लालची हो गए हैं। मनुष्यों ने परमेश्वर को उचित आदर तथा महिमा नहीं दिया है। नादान, नासमझ एवं नालायक बच्चों की तरह हमने उसका तिरस्कार किया है। घमण्ड तथा ईर्ष्या-द्वेष से भरकर हम परमेश्वर की इच्छा का विरोध करते हैं। हमारा यही स्वभाव तथा व्यवहार पाप कहलाता है। परमेश्वर पवित्र है और पाप से घृणा करता है। हम अपने स्वभाव के कारण अब उसके शत्रु हो गये हैं।

परमेश्वर की व्यवस्था में कहा गया है कि पापी मनुष्य परमेश्वर का मुँह नहीं देख सकता। पाप ने हमारे तथा परमेश्वर के बीच एक खाँई बना दिया है, भेद पैदा कर दिया है। जो पाप करता है वह अवश्य दण्ड पाएगा और सदा के लिए परमेश्वर से दूर कर दिया जायेगा। हम इस संसार के न्याय से तो किसी प्रकार से बच सकते हैं परन्तु हृदय की बातों को जानने वाले परमेश्वर को हम धोखा नहीं दे सकते।

तो फिर हम पापी लोग परमेश्वर की मित्रता कैसे पा सकते हैं। वस्तुतः यह मनुष्य के सामर्थ्य या प्रयत्नों से सम्भव नहीं है। परमेश्वर ने स्वयं इसका प्रबन्ध किया है, क्योंकि वह किसी पापी के विनाश से प्रसन्न नहीं होता परन्तु चाहता है कि लोग पापों से पश्चाताप करें तथा मन में परमेश्वर से प्रेम करें। इसी कारण आज से दो हजार वर्ष पूर्व

प्रभु यीशु मसीह संसार में आए। वे आदिकाल से हैं तथा वही सृष्टिकर्ता व उद्धारकर्ता हैं। प्रभु यीशु मसीह के जीवन, व्यक्तित्व तथा कार्यों से परमेश्वर ने मानवजाति के प्रति अपने प्रेम को प्रकट किया है। प्रभु यीशु ने कहा है कि बिना मेरे द्वारा कोई पिता के पास नहीं पहुँच सकता ।

प्रभु यीशु ही मनुष्यों के सच्चे मित्र हैं। उन्होंने पापियों तथा समाज के गिरे हुए लोगों से भी प्रेम किया। उन्होंने कहा है कि मैं धर्मियों को नहीं, परन्तु पापियों को बचाने आया हूँ, क्योंकि भले-चंगे लोगों को नहीं, परन्तु रोगियों को ही वैद्य की आवश्यकता होती है। वे पापियों को दण्ड देने या नाश करने नहीं, परन्तु उनसे प्रेम करने, क्षमा देकर उनके जीवन को पूरी तरह से बदलने के लिए आए।

प्रभु यीशु का जीवन त्याग व बलिदान का जीवन था। उन्होंने कहा कि मैं सेवा लेने नहीं, परन्तु सेवा करने और अपना प्राण बहुतों के छुटकारे के लिए देने आया हूँ। प्रभु यीशु ने दुखी एवं रोगी लोगों की सेवा की। उन्होंने कोढ़ियों को भी स्पर्श करके चंगा कर दिया। उनका स्वभाव अत्यन्त नम्र था, और उन्होंने अपने शिष्यों के भी पैर धोये।

प्रभु यीशु ने कहा है कि इससे बड़ा प्रेम कोई और नहीं हैं कि कोई अपने मित्रों के लिए प्राण दे। हमारे पापों की क्षमा के लिए अपने प्राण देने हेतु ही प्रभु यीशु ने मनुष्य-देह ग्रहण किया था। पवित्रशास्त्र कहता है, "जब हम अत्यन्त असहाय थे, हमारे बचाव का कोई मार्ग नहीं था, तब मसीह बिल्कुल ठीक समय पर आया और हम पापियों के लिए ही मर गया, जो उसके किसी काम के न थे। चाहे हम भले भी होते, हम वास्तव में किसी से आशा नहीं रख सकते थे कि वह हमारे लिए मरे, यद्यपि इसकी सम्भावना बहुत ही कम हो सकती है। परन्तु जब हम पापी ही थे तब परमेश्वर ने मसीह को हमारे लिए मरने को भेजकर अपना महान् प्रेम हम पर प्रकट किया।" एक सच्चे मित्र की तरह प्रभु यीशु ने हमारे पापों का दण्ड अपने देह पर उठाकर कलवरी के क्रूस पर अपना प्राण दे दिया और इस कारण परमेश्वर हमें अपराध-मुक्त घोषित करता है और अब हमें दुबारा दण्ड न देगा।

क्रूस पर लटकते हुए भी प्रभु यीशु ने अपने सताने वालों के लिए प्रार्थना किया—"पिता, इन्हें क्षमा कर दे, क्योंकि ये नहीं जानते कि ये क्या कर रहे है।" मृत्यु के बाद वे कब्र में गाड़े गए, परन्तु अपनी प्रतिज्ञा के अनुसार तीन दिन बाद पुनः जी उठे और अपने शिष्यों से मिलकर उनके विश्वास को दृढ किया। अब प्रभु यीशु सदाकाल के लिए जीवित हैं और परमेश्वर के सिंहासन पर आसीन होकर हमारे लिए प्रार्थना कर रहे हैं। वही हमारे सच्चे जीवन-साथी तथा सहायक हैं।

यदि आप प्रभु यीशु को अपना मित्र बना लेते है तो आप परमेश्वर की भी मित्रता प्राप्त करते हैं। यदि आप अपने पापों को स्वीकार करके सच्चे हृदय से प्रभु यीशु के पास आते हैं और मानते हैं कि प्रभु यीशु ने आपके पापों का दण्ड उठा लिया है तो परमेश्वर आपको पापों से क्षमा तथा सच्ची आत्मिक शान्ति प्रदान करता है। प्रभु यीशु आपके सच्चे जीवन-साथी बन जायेंगे क्योंकि उन्हें आपकी मित्रता की चाह है।

इस विषय में अधिक जानकारी के लिए निम्न पते पर सम्पर्क करें—

The Light of Hope
Cheppad P.O., Alappuzha Dist - 690 507
Kerala State, India